Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 12 – हिंदी

मैराथन क्लास

पद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

महादेवी वर्मा- गीत

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना !
जाग तुझको दूर जाना !

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले ,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले ;
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया ,
जाग या विद्युत - शिखाओं में निठुर तूफान बोले !
पर तुझे है नाश - पथ पर चिह्न अपने छोड़ आना !
जाग तुझको दूर जाना !

व्याख्या - हे प्राण ! निरन्तर जागरूक रहनेवाली आँखें आज आलस्ययुक्त क्यों हैं और तुम्हारा वेश आज अस्त - व्यस्त क्यों है ? आज अलसाने का समय नहीं। आलस्य और प्रमाद को छोड़कर अब तुम जाग जाओ ; क्योंकि तुम्हें बहुत दूर जाना है। तुम्हें अभी बहुत बड़ी साधना करनी है। चाहे आज स्थिर हिमालय कम्पित हो जाए या फिर आकाश से प्रलयकाल की वर्षा होने लगे अथवा घोर अन्धकार प्रकाश को निगल जाए और चाहे चमकती और कड़कती हुई बिजली में से तूफान बोलने लगे तो भी तुम्हें उस विनाश - वेला में अपने चिह्नों को छोड़ते चलना है और साधना - पथ से विचलित नहीं होना है। महादेवी जी पुनः अपने प्राणों को उद्बोधित करती हुई कहती हैं कि हे प्राण ! तू अब जाग जा ; क्योंकि तुझे बहुत दूर जाना है।

काव्य-सौन्दर्य-

- भाषा - शुद्ध खड़ीबोली।
- अलंकार - इन पंक्तियों में हिमगिरि के हृदय में कम्प ' , ' व्योम का रोना ' ,

' तिमिर का डोलना ' और ' तूफान के बोलने ' आदि के माध्यम से प्रकृति का मानवीकृत रूप में वर्णन किया गया है ; अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है ।

- रस - वीर ।

1. पद्यांश के पाठ और कवयित्री का नाम लिखिए । अथवा उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

   उ०- प्रस्तुत पद्यांश श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा रचित ' सान्ध्य - गीत ' काव्य - संग्रह से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित ' गीत' शीर्षक से उद्धृत है ।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। उपर्युक्त।

3. इन पंक्तियों में महादेवी वर्मा किसे सम्बोधित करते हुए अपने उद्गार व्यक्त कर रही हैं ?

   उ०- इन पंक्तियों में महादेवी वर्मा अपने प्राणों को सम्बोधित करते हुए अपने उद्गार व्यक्त कर रही है ।

4. निरन्तर जागरूक रहनेवाली आँखों से कवयित्री क्या कह रही हैं ?

उ०- निरन्तर जागरूक रहनेवाली आंखो से कवयित्री कह रही हैं कि हे प्राण ! निरन्तर जागरूक रहनेवाली आँखे आज आलस्ययुक्त क्यों है और तुम्हारा वेश आज अस्त - व्यस्त क्या है ?

5. किन अवरोधी दशाओं में भी महादेवी वर्मा अपने प्राणों को विचलित न होने के लिए कह रही हैं ?

उ०- महादेवी वर्मा के अनुसार उनकी साधना के अनन्तर चाहे आज स्थिर हिमालय कम्पित हो जाए या फिर आकाश से प्रलयकाल की वर्षा होने लगे अथवा घोर अन्धकार प्रकाश को निगल जाए या चाहे चमकतो और कड़कती हुई बिजली में से तूफान बोलने लगे तो भी वे अपने प्राणों को विचलित न होने के लिए कह रही हैं।

6. प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवयित्री ने पथिक को क्या प्रेरणा दी है?

उ०- प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवयित्री ने पथिक को निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाने की प्रेरणा दी है।

7. मार्ग में आने वाली अनेकानेक कठिनाइयों के बावजूद भी पथिक को विनाश और विध्वंस के बीच क्या छोड़ जाना है?

उ०- मार्ग में आने वाली अनेकानेक कठिनाइयों के बावजूद भी पथिक को विनाश और विध्वंस के बीच नव-निर्माण के चित्र छोड़ जाना है।

8. 'हिमगिरि' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उ०- 'हिमगिरि' शब्द के दो पर्यायवाची हैं-हिमालय, गिरिराज।

9. कवयित्री आंखों से क्या कह रही है?

उ०- कवयित्री आंखों से कह रही है कि निरंतर जागरूक रहने वाली आंखें आज नींद से भारी अर्थात अलसी युक्त क्यों हैं?

10. अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कंप हो ले पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

उ०- मानवीकरण अलंकार है।

कह न ठंडी सांस में अब भूल वह जलती कहानी ,
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी ;
हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका ,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी !
है तुझे अंगार - शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना !
जाग तुझको दूर जाना !

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

व्याख्या - व्याख्या-महादेवीजी कहती हैं कहती हैं कि जीवन में दु:ख भी आता है तथा परिस्थितियों का दारुण आक्रमण भी होता है, परन्तु मनुष्य को उन्हें भुलाकर ऊँचे लक्ष्य को प्राप्त करने की साधना में निरन्तर लगे रहना चाहिए। वे कहती है कि उन कष्टों को ठण्डी साँस लेते हुए दोहराने से कोई लाभ नहीं। जब तक हृदय में आग नहीं होती, तब तक मनुष्य की आँखो से टपकते आँसुओं का भी मूल्य कुछ नहीं होता। हृदय की वह आग, वह तड़प ही मनुष्य को कठिन साध्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है और परमात्मा को पाने का साधन बनती है।

कवयित्री कहती हैं कि यदि उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किए गए प्रयत्न में असफलता भी हाथ लगती है तो वह भी किसी विजय से कम नहीं होगी। पतंगा उद्देश्य की राह में जल मरता है, फिर भी उसकी राख दीपक की जलती हुई लौ से मिलकर अमर हो जाती है। इसी प्रकार साधक को उद्देश्य की राह में यदि मिट भी जाना पड़े तो भी वह अमर हो

जाता है। महादेवीजी कहती हैं कि तुझे अपनी तपस्या से संसाररूपी इस अंगार-शय्या अर्थात् कष्टों से भरे इस संसार में फूलों की कोमल कलियों जैसी आनन्दमय परिस्थितियों का निर्माण करना है। इसीलिए हे साधक! तू जाग; क्योंकि अभी तुझे बहुत दूर जाना है।

- अलंकार - रूपक , अनुप्रास एवं मानवीकरण ।
- रस - श्रृंगार ।

1. पद्यांश के पाठ और कवयित्री का नाम लिखिए। अथवा उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

   उ०- उपर्युक्त |

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
3. प्रस्तुत काव्यांश में महादेवी वर्मा ने क्या आह्वान किया है ?

उ०- प्रस्तुत काव्यांश में महादेवी वर्मा ने मनुष्य की आत्मा को साधना - पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा देते हुए अपने आत्मबल को जगाने का आह्वान किया है।

4. " हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका। " इस पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उ०- हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका। " इस पंक्ति के माध्यम से एकनिष्ठ और सच्चे प्रेम के परिणाम के सन्दर्भ में महादेवीजी कहती हैं कि यदि किसी के हृदय में अपने किसी अज्ञात प्रियतम के प्रति सच्चा प्रेम है तथा उसके हृदय में अपने प्रियतम से मिलने की एकनिष्ठ छटपटाहट विद्यमान है तो इस स्थिति में व्यक्ति की हार भी उसकी जीत ही मानी जाएगी।

5. महादेवीजी के अनुसार मनुष्य के साधना - पथ में कौन उसके शत्रु बनकर खड़े हो जाते हैं ?

उ०- महादेवीजी के अनुसार मनुष्य के साधना - पथ में अकर्मण्यता और आलस्य उसके शत्रु बनकर खड़े हो जाते हैं ।

6. इस पद्यांश से कवयित्री का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०- इस पद्यांश से कवयित्री का आशय है कि साधना के कष्टों से घबराकर साधक को हार नहीं माननी चाहिए। साधना-पथ पर मिली असफलता भी गौरव का ही कारण बनती है।

7. किसकी राख अमर दीपक का भाग बनकर अमर हो जाती है?

उ०- पतंगा दीपक पर जलकर राख बन जाता है। उसकी राख अमर दीपक का भाग बनकर अमर हो जाती है।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

8. 'क्षणिक' शब्द से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए।

उ०- क्षणिक = क्षण + इक।

9. 'है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियाँ बिछाना' - इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उ०- रूपक अलंकार।

10. 'दृग' और 'पताका' शब्दों के एक-एक पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उ०- दृग - आँख, पताका- ध्वज।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला !
घेर ले छाया अमा बन ,
आज कज्जल - अश्रुओं में रिमझिमा ले यह घिरा घन ;
और होंगे नयन सूखे , तिल बुझे औ ' पलक रूखे
आर्द्र चितवन में यहाँ शत विद्युतों में दीप खेला !

व्याख्या - साधना - पथ को अपरिचित होने दो और उस मार्ग के पथिक प्राण को भी अकेला रहने दो। मेरी छाया आज मुझे भले ही अमावस्या की रात्रि के गहन अन्धकार के समान घेर ले और मेरी काजल लगी आँखें भले ही बादल के समान आँसुओं की वर्षा करने लगें , फिर भी चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इस प्रकार की कठिनाइयों को देखकर जो आँखें सूख जाती हैं , जिन आँखों के तिल बुझ जाते हैं और जिन आँखों की पलकें रूखी - रूखी - सी हो जाती हैं , वे कोई और आँखें होंगी। इस

प्रकार के कष्टों के आने पर भी मेरी चितवन आर्द्र बनी रहेगी ; क्योंकि मेरे जीवन - दीप ने सैकड़ों विद्युतों में भी आज खेलना सीखा है। अर्थात् कष्टों से घबराकर पीछे हट जाना मेरे जीवन - दीप का स्वभाव नहीं है।

- अलंकार - अनुप्रास और भेदकातिशयोक्ति।
- रस - करुण तथा श्रृंगार।

1. पद्यांश के पाठ और कवयित्री का नाम लिखिए। अथवा उपर्युक्त पंद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

   उ०- प्रस्तुत पद्यांश श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा रचित ' दीपशिखा ' नामक काव्य - संग्रह से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित ' गीत' शीर्षक से उद्धृत है।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। उपर्युक्त।

3. इन पंक्तियों में कवयित्री किसकी कठिनाइयों का विवरण प्रस्तुत करती हुई अपने भाव व्यक्त कर रही हैं ?

उ०- इन पंक्तियों में कवयित्री साधना के अपरिचित पथ की कठिनाइयों का विवरण प्रस्तुत करती हुई अपने भाव व्यक्त कर रही हैं।

4. अपनी छाया और आँखों के सम्बन्ध में कवयित्री क्या कह रहा है ?

उ०- अपनी छाया और आँखों के सम्बन्ध में कवयित्री कह रही हैं कि मेरी - छाया आज मुझे भले ही अमावस्या की रात्रि के गहन अन्धकार के समान घेर ले और मेरी काजल लगी आँखें भले ही बादल के समान आँसुओं की वर्षा करने लगें , फिर भी मैं चिन्ता नहीं करूँगी।

5. " और होंगे नयन सूखे " पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०- " और होंगे नयन सूखे " पंक्ति का आशय यह है कि कठिनाइयों को देखकर जो आँखें सूख जाती हैं , जिन आँखों के तिल बुझ जाते हैं और जिन आँखों की पलकें रूखी - रूखी - सी हो जाती हैं , वे कोई और आँखें होंगी , मेरी कदापि नहीं।

6. कवयित्री को साधना-पथ पर आगे बढ़ने से कौन नहीं रोक सकता?

उ०- कवयित्री को मार्ग में आने वाली बाधाएँ साधना-पथ पर आगे बढ़ने से नहीं रोक सकतीं।

7. कवयित्री के साधनारूपी दीपक पर किनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता?

उ०- कवयित्री के साधनारूपी दीपक पर घनघोर वर्षा और कौंधती बिजलियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

8. 'प्राण' तथा 'अश्रु' शब्दों के वचन बताइए।

उ०- 'प्राण' तथा 'अश्रु' सदा बहुवचन में रहने वाले शब्द है।

9. प्रस्तुत पद्यांश में लेखिका किस पथ पर आगे बढ़ने का आह्वान करती है?

उ०- प्रस्तुत पद्यांश में लेखिका साधना के अपरिचित पथ पर बिना घबराहट एवं हिचकिचाहट के आगे बढ़ने का आह्वान करती है।

10. इस पद्यांश में कवयित्री की किस भावना को व्यक्त किया गया है?

उ०- प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री ने वेदना-भाव को व्यक्त किया है।

मैं नीर - भरी दु:ख की बदली !
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा ,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा ,
नयनों में दीपक से जलते पलकों में निर्झरिणी मचली !

व्याख्या - मैं नीर - भरी दु:ख की बदली हूँ ; अर्थात् मेरा जीवन दु:ख की बदलियों से घिरा हुआ है। जिस प्रकार बदली पानी से भरी हुई रहती है , उसी प्रकार मेरी आँखें भी अश्रुपूर्ण रहती हैं। महादेवी जी कहती हैं कि जिस प्रकार बदली में उसके कम्पन का स्थायित्व रहता है। उसी प्रकार मेरे प्राणों में विरह के कारण उत्पन्न दु:ख का कम्पन स्थायी रूप से व्याप्त है। जिस प्रकार बदली की गर्जना सुनकर ताप से त्रस्त विश्व प्रसन्न होता है। उसी प्रकार मेरे रुदन से भी घायल संसार को प्रसन्नता मिलती है। जिस प्रकार बदली में बिजली कौंधती है और उसके जल से नदियाँ प्रवाहित हो जाती हैं

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

, उसी प्रकार मेरे नेत्र भी विरह - वेदना में दीपक के समान जलते रहते हैं और मेरी पलकों से नदी के जल के समान विरह के अश्रु निरन्तर बहते रहते हैं।

काव्य - सौन्दर्य- (1) इन पंक्तियों में महादेवीजी की विरह - वेदना का आधिक्य व्यंजित है।

- अलंकार - रूपक , उपमा एवं मानवीकरण।
- रस - वियोग श्रृंगार।

1. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए। उपर्युक्त।
2. पद्यांश के पाठ और कवयित्री का नाम लिखिए। अथवा उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उ०- प्रस्तुत पद्यांश श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा रचित ' सान्ध्य - गीत ' नामक काव्य - संग्रह से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित ' गीत' शीर्षक से उद्धृत है।

3. महादेवीजी ने अपने जीवन की तुलना किससे की है ?

उ०- महादेवीजी ने अपने जीवन की तुलना बदली से की है।

4. " मैं नीर - भरी दुःख की बदली ! " इस पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए। मिलती है ?

उ०- " मैं नीर - भीर दुःख की बदली। " इस पंक्ति में कवयित्री महादेवीजी बदली से अपने जीवन की तुलना करती हुई कह रही है कि वे नीर - भरी दुःख की बदली हैं ; अर्थात् उनका जीवन दुःख की बदलियों से भरा हुआ है। जिस प्रकार बदली पानी से भरी हुई रहती है , उसी प्रकार अथाह विरह की वेदना के कारण उनकी आँखों में आँसू भरे हुए रहते हैं।

5. कवयित्री के रुदन से घायल संसार को किस प्रकार प्रसन्नता मिलती है?

उ०- जिस प्रकार बदली की गर्जना को सुनकर ताप से त्रस्त संसार प्रसन्न होता है , उसी प्रकार कवयित्री के रुदन से भी घायल संसार को प्रसन्नता मिलती है।

6. कवयित्री के निरन्तर रुदन का क्या कारण है?

उ०- प्रीतम से मिलने की व्याकुलता कवयित्री के निरन्तर रुदन का कारण है।

7. कवयित्री आकाश से अपने हृदय की समानता करते हुए क्या कहती है?

उ०- कवयित्री आकाश से अपने हृदय की समानता करते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार आकाश बहुरंगी मेघरूपी दुपट्टे से सुशोभित है उसी प्रकार मेरा हृदय भी बहुरंगी नाना अभिलाषाओं से रंगा हुआ है।

8. 'क्रन्दन में आहत विश्व हँसा' का आशय लिखिए।

उ०- 'क्रन्दन में आहत विश्व हँसा' पंक्ति के माध्यम से कवयित्री कहती हैं कि जिस प्रकार बदली की गर्जना सुनकर ग्रीष्म ऋतु के ताप से त्रस्त विश्व प्रसन्न होता है, उसी प्रकार मेरे रुदन से भी घायल संसार को प्रसन्नता मिलती है।

9. कवयित्री ने अपनी तुलना किससे की है?

उ०- कवयित्री ने अपनी तुलना बदली से की है।

10. 'निर्झरिणी' तथा 'दुकूल' शब्द का अर्थ लिखिए।

उ०- 'निर्झरिणी' का अर्थ-नदी और 'दुकूल' का अर्थ-दुपट्टा है।

विस्तृत नभ का कोई कोना ,
मेरा न कभी अपना होना ,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली !

व्याख्या - बदली आकाश में रहती है , किन्तु विस्तीर्ण आकाश का कोई भी कोना उसका अपना नहीं होता है , वह तो मात्र इधर - उधर भ्रमण करती रहती है। उसका परिचय . और उसका इतिहास तो केवल इतना ही है कि वह अभी - अभी उमड़ी थी और देखते - ही - देखते मिट गई। इस प्रकार महादेवीजी अपने जीवन के विषय में कहती हैं कि इस विस्तृत संसार का कोई भी भाग मेरा अपना नहीं है। मेरा तो केवल इतना ही परिचय और यही इतिहास है कि मैं कल आई थी और आज जा रही हूँ।

- अलंकार - अनुप्रास और मानवीकरण।

- रस - वियोग श्रृंगार।
- शब्दशक्ति - लक्षणा।
- गुण - माधुर्य।

1. पद्यांश के पाठ और कवयित्री का नाम लिखिए। अथवा उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

   उ०- प्रस्तुत पद्यांश श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा रचित ' सान्ध्य - गीत ' नामक काव्य - संग्रह से हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के काव्य भाग में संकलित ' गीत' शीर्षक से उद्धृत है।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

3. यहाँ किसके माध्यम से महादेवी वर्मा अपने जीवन की व्याख्या प्रस्तुत कर रही हैं ?

   उ०- यहाँ बदली के माध्यम से महादेवी वर्मा अपने जीवन की व्याख्या प्रस्तुत कर रही हैं।

4. आकाश में रहनेवाली बदली के सन्दर्भ में यहाँ क्या कहा गया है ?

उ०- आकाश में रहनेवाली बदली के सन्दर्भ में यहाँ यह कहा गया है कि बदली आकाश में रहती है , किन्तु विस्तीर्ण आकाश में कोई भी कोना उसका अपना नहीं होता , वह तो मात्र इधर - उधर भ्रमण करती रहती है ।

5. पद्यांश के अन्त में कवयित्री अपना परिचय किस रूप में प्रस्तुत कर रही हैं ?

उ०- पद्यांश के अन्त में कवयित्री अपना परिचय देती हुई कहती हैं कि इस विस्तीर्ण संसार में कोई भी भाग मेरा अपना नहीं है । मेरा तो केवल इतना ही परिचय है और यही इतिहास है कि मैं कल आई थी और आज जा रही हूँ।

6. पद्यांश की अलंकर योजना पर प्रकाश डालिए।

उ०- अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार प्रयुक्त हुए हैं।

7. कवयित्री अपने जीवन की तुलना किससे और क्यों करती है?

उ०- कवयित्री अपने जीवन की तुलना नीर भरी बदली से करती है क्योंकि उसका परिचय और इतिहास इतना है कि वह भी क्षणभंगुर है।